ISBN:978-81-974990-9-8

7.कोविड–19का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

डॉ. कल्पना सिंह

सहायक प्राध्यापिका,
ग्रेसियस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अभनपुर, रायपुर (छ.ग.).

सार संक्षेपः–

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर कोविड–19 के प्रभाव में जीडीपी में गिरावट आई है, इसका मुख्य कारण धीमी गति से विकास तथा प्रतिव्यक्ति आय का कम होना है। कोविड–19 के प्रकोप ने सामाजिक और आर्थिक जीवन को ठप्प कर दिया है। वैश्विक अर्थव्यवस्था आर्थिक गतिविधियाँ, व्यापार तथा वित्तीय लेनदेन का संगठित नेटवर्क है, जो विभिन्न देशों के मध्य संचालित होता है। यह अर्थव्यवस्था न केवल देशों के बीच बल्कि विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में भी संसाधनों के वितरण और उत्पादन को प्रभावित करती है। वैश्विक आर्थिक नीतियाँ जैसे कि वैश्वीकरण, मुक्त व्यापार समझौते और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठनों की भूमिका इसका निर्धारण करती है।

भारत में कोविड–19 महामारी का आर्थिक प्रभाव बहुत ही विघटनकारी है। इसका प्रभाव विभिन्न प्रकार के उत्पादन चैनलों पर पड़ा तथा उत्पादन चैनलों के बंद होने के कारण अर्थव्यवस्था की वृद्धि में गिरावट आ गई। राजनैतिक क्षेत्र पर वैश्वीकरण का प्रभाव यह पड़ा कि देशों की राष्ट्रीय सीमितता कम हो गई।

कोविड–19 के शुरूआत के साथ ही वैश्विक अर्थव्यवस्था में तीव्र दोहरी मंदी देखी गई। कई अंतर्राष्ट्रीय एजेसिंयों ने पहले ही पूर्वानुमान लगाया है 2020 में वैश्विक वृद्धि 3 प्रतिशत हो सकती है, जो कि महामारी के बिना सकारात्मक 3 प्रतिशत वृद्धि 3 प्रतिशत वृद्धि के आधारभूत प्रक्षेपण से लगभग 6 प्रतिशत अंको की गिरावट है, वृद्धि पूर्वानुमानों में इस तरह के उतार–चढ़ाव अभूतपूर्व है। कोविड–19 महामारी के कारण अर्थव्यवस्था की वापसी के लिए नीतिगत नीतियों का निर्माण करना आवश्यक हो गया, जिसमें स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा, राजकोषीय नीति और वित्तीय, औद्योगिक और व्यापार नीतियां शामिल है।

इन नीतियों के प्रभाव से ही अपेक्षित परिणाम तथा मंदी के कारण होने वाली क्षति सें अर्थव्यवस्था में पुनः सुधार होगा।

कीवर्ड–प्रभाव, अर्थव्यवस्था, महामारी, कोविड–19, मंदी।

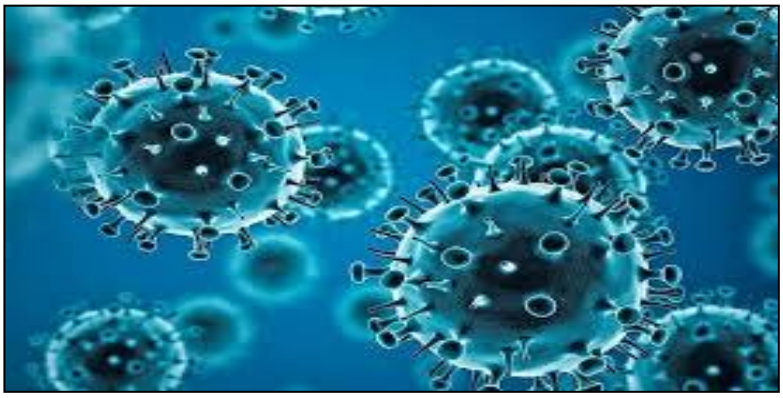

परिचयः– अर्थव्यवस्था का अर्थः–

अर्थव्यवस्था एक मानव निर्मित संगठन है, जिसके द्वारा माननीय आवश्यकताओं की संतुष्टि होनी है। अर्थव्यवस्था एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग जीविका प्राप्त करते है यह समय तथा स्थान के अनुसार भिन्न होती है। प्राचीन काल में जीविका प्राप्त करना आसान था, परंतु समय से साथ–साथ यह प्रक्रिया जटिल हो गई। जीविका अर्जन के लिए किया गया कार्य सदैव वैध व न्यायपूर्ण होना चाहिए। अनैतिक व अवैध कार्य जिससे आय अर्जित की जाती है उन्हें आर्थिक गतिविधियाँ जीविका प्राप्त करने की पद्धति की श्रेणी में नहीं लेना चाहिए।

अतः यह कहना उपयुक्त होगा कि अर्थव्यस्था एक संरचना है जहां सारी आर्थिक गतिविधियाँ पूर्ण होती है। समय के साथ निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अन्य देशों के साथ आर्थिक संबंधों को स्थापित किया। जिसमें उत्पादन, उपयोग, आर्थिक प्रबंधन, सामान्य रूप से कार्य, वित्तीय लेनदेन और उनके मध्य संचालित सभी आर्थिक गतिविधियाँ शामिल हैं।

वैश्विक अर्थव्यवस्थाः–

वैश्विक अर्थव्यवस्था (Global Economy) शब्द का तात्पर्य प्रत्येक देश के भीतर और विश्व के सभी देशों के मध्य आर्थिक गतिविधियों से है जो संपूर्ण आर्थिक प्रणाली को संचालित करती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था दुनिया के सभी देशों के बीच आर्थिक योजनाओं व नीति को प्रभावित करती है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था का उदय लगभग 1000 ई. में हुआ जिसमें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का तेजी में विस्तार हुआ जिसका विश्व आर्थिक इतिहास पर गहरा प्रभाव पड़ा। 1000 से 1500ई. के दौरान देशों व क्षेत्रों के मध्य व्यापार में उछाल ने वैश्विक जनसंख्या और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की एक अभूतपूर्व अवधि की शुरुआत की।

इस 500साल की अवधि के अंत तक, दुनिया की आबादी लगभग दोगुनी हो गई थी। यह संभावना है कि प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का औसत विश्व स्तर भी 1000 से 1500ई. के दौरान 436 अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 566 अमेरिकी डॉलर हो गया था।

यदि हम विगत् तीस वर्षो पर नजर डाले तो देखते है कि विश्व के दूरस्थ भागों को जोड़ने वाली वैश्वीकरण की प्रक्रिया में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की मुख्य भूमिका रही है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पादन का दूसरे देशों में क्यों प्रसार कर रही हैं और किस तरह से प्रसार कर रही है? वैश्वीकरण की प्रक्रिया एवं इसके प्रभावों को समझने में उत्पादन का एकीकरण और बाजार का एकीकरण एक महत्वपूर्ण धारणा है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रकार :–

वैश्विक अर्थव्यवस्था (Global Economy) को निम्नलिखित प्रकारो में विभाजित किया जा सकता है,

1. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalist Economy)

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसमें संपूर्ण आर्थिक क्रियाओं का नियंत्रण, प्रबंधन तथा निर्धारण, बाजार की शक्तियों पर आधारित होती है, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था कहलाती है।

इसे स्वतंत्र अर्थव्यवस्था भी कहा जाता है। इसमें अर्थव्यवस्था का संचालन, कीमन यंत्र के आधार पर होता है।

पूंजीपति, उत्पादक एवं उपभोक्ता इस अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण तत्व होते हैं। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में सरकार का कोई नियंत्रण नहीं होता है।

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएंः–

1. **स्वतंत्र मांग एंव पूंजी बल से कार्यान्वित–** पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में बाजार इतना संपन्न होता है कि वह क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच आपसी संबंध को बढ़ावा देता है जिसके फलस्वरूप, पूजीवादी अर्थव्यवस्था को बाजार स्वतंत्र मांग व पूर्तिबल से कार्यान्वित होता है।
2. **मांग पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों से मूल्य निर्धारण–** इस तरह के बाजार में जहाँ पूंजी को प्रमुख प्राथमिकता दी जाती है वहां वस्तुओ एवं सेवाओं की कीमतें मांग तथा पूर्ति की बाजार शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है।

3. **उपभोक्ता ही बाजार का सम्राट–** पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता ही बाजार का राजा होता है। उपभोक्ता अपनी आय, आदत, प्राथमिकताओं के अनुसार ही उत्पादों को क्रय कर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है। जिस कारण उत्पादक भी उन्ही वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। जिनके उत्पादन से उन्हें अधिकतम लाभ प्राप्त हो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उत्पादक वर्ग, उपभोक्ताओं द्वारा की गई मांग के विरुद्ध उत्पादन करना पसंद नही करते अन्यथा उन्हें हानि उठानी पड़ेगी।
4. **पूंजी संचय को बढ़ावा –** पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में पूंजी संचय की प्रवृत्ति को ज्यादा प्रोत्साहन मिलता है और इस अर्थव्यवस्था में पूंजी को ही सर्वोत्तम साधन के रूप में माना जाता है।
5. **सरकारी हस्तक्षेप नहीं–** बाजार की मांग एंव पूर्ति की किसी भी प्रक्रिया में सरकार कोई हस्तक्षेप नही करती है। साथ ही उत्पादकों के निर्णयों में भी सरकार की तरफ से कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाता है। सरकार केवल अपनी ओर से कानून व्यवस्था एवं प्रतिरक्षा यानि कि उचित रखरखाव पर अपना ध्यान देती है।
6. **निजी हाथों में स्वामित्व एवं प्रबंधन–** पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर निजी हाथों का स्वामित्व होता है। साथ ही उसका प्रबंधन भी निजी हाथों में यानि कि पूंजीपतियों के हाथों में होता है। ऐसी अर्थव्यवस्था में उत्पादक, निर्णय लेने में स्वतंत्र होता है एवं उसके लाभ पर भी उत्पादक का ही अधिकार होता है।

समाजवादी अर्थव्यवस्थाः–

समाजवादी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत उत्पादन की क्रिया में मुख्य भूमिका सार्वजनिक क्षेत्रों में निभाई जाती है। जिस अर्थव्यवस्था में उत्पादनों के साधनों पर समाज का स्वामित्व होता है तथा वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन समाज कल्याण के लिए होता है। इसे साम्यवादी तथा जनवादी अर्थव्यवस्था के नाम से भी जाना जाता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था का जन्म पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के प्रतिक्रिया के रूप में हुआ है।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने मुक्त बाजार की नीति का समर्थन किया था, जिसे अर्थशास्त्र में लैसेज फेयर का सिद्धांत कहते हैं। जिसके अनुसार सरकार को आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपना उद्योग धंधा एवं व्यापार करने को पूरी आजादी होनी चाहिए। मूल्य का निर्धारण मांग आपूर्ति के सिद्धांत पर होगा। सरकार का काम देश में कानून व्यवस्था बनाए रखना एवं बाहरी आक्रमण से देश को सुरक्षित रखना होना चाहिए। इन्हीं विचारो से प्रभावित होकर सामंतवाद के पतन के पश्चात पूंजीवाद का विकास हुआ।

समाजवादी अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ–

समाजवादी अर्थव्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताएं है–

1. **समाज का उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व –** समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादक सामाजिक उद्देश्य के लिए संपत्ति जैसे– भूमि, पूंजी आदि का प्रयोग करता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादनों के साधनों पर समाज का स्वामित्व होता है।
2. **उत्पादन संबंधी निर्णय सरकार द्वारा –** उत्पादन संबंधी सभी निर्णय सरकार द्वारा लिए जाते है अर्थात् समाजवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव होता है।
3. **कीमत नियंत्रण महत्वपूर्ण नहीं–** समाजवादी अर्थव्यवस्था में कीमत यंत्र का विशेष स्थान नहीं होता है केवल वस्तुओं के वितरण आर्थिक लेखांकन में इनका सहारा लिया जाता है।
4. **प्रतिस्पर्धा का अभाव–** समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर सरकार का नियंत्रण होता है जिस कारण सामान्य तौर पर प्रतिस्पर्धा का कोई स्थान नहीं होता है।
5. **आर्थिक असमानता –** समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर सामाजिक अर्थव्यवस्था के कारण आर्थिक समानता होती है। आय के वितरण में जो असमानताएं होती है वह अपनी कुशलता के गुण के कारण ही होती है।

मिश्रित अर्थव्यवस्थाः–

मिश्रित अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जहां उत्पादन के साधनों का स्वामित्व सरकार तथा निजी व्यक्ति दोनों के पास होता है और यह अर्थव्यवस्था पूंजीवाद एवं समाजवाद बीच का रास्ता है। जैसे भारत की अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था है। मिश्रित अर्थव्यवस्था के तहत निजी और सार्वजनिक क्षेत्र एक सामान्य आर्थिक योजना के ढांचे के भीतर सामान्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सह अस्तित्व में रहते है। सरकार द्वारा आर्थिक गतिविधि को अर्थव्यस्था के विशेष सामाजिक विशेष रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए निर्देशित किया जाता है जिससे सामाजिक उद्येश्यो की प्राप्ति की जा सके। मिश्रित अर्थव्यवस्था व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करती है तथा सामाजिक कल्याण को भी प्राथमिकता देती है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था की विशेषताएंः–

1. **सभी क्षेत्रों की भागीदारी–**मिश्रित अर्थव्यवस्था में सभी क्षेत्रों की परस्पर सहभागिता होती है जिसके परिणामस्वरूप दक्षता और उत्पादकता में वृद्धि होती है तथा आय मे होने वाली असमानता दूर हो जाती है। जिसके कारण आर्थिक स्थिरता बनी रहती है।
2. **आर्थिक गतिविधियों का योजनाबद्ध तरीके से निर्माण–**मिश्रित अर्थव्यवस्था में आर्थिक गतिविधियां योजनाबद्ध तरीके से बनायी जाती है जिसमें सरकार भी संपूर्ण आर्थिक प्रणाली की विस्तृत योजना बनाती है कि जिससे देश आर्थिक विकास की तीव्र दर प्राप्त करता है।
3. **सहकारी क्षेत्र का योगदान –** मिश्रित अर्थव्यवस्था में सहकारी क्षेत्र का महत्व बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि सरकार सहकारी समितियों से जुड़े क्षेत्रों जैसे– गोदाम, डेयरी

उद्योग आदि की वित्तीय सहायता के साथ–साथ आवश्यक वस्तुएँ भी देती है जिससे मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले देशों के उत्पादकता में वृद्धि होती है तथा आर्थिक स्थिरता बनी रहती है।

4. **सामाजिक कल्याण–**मिश्रित अर्थव्यवस्था का उद्देश्य सामाजिक कल्याण के लिए धन की असमानता को कम करके गरीबी व बेरोजगारी को कम करता है। यह अर्थव्यवस्था सामाजिक सुरक्षा और सार्वजनिक शिक्षा सुविधाओं पर भी कार्य करती है एवं बढ़ाती है।
5. **स्वतंत्रता और नियंत्रण –** सभी व्यक्तियों को संपत्ति तथा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता होती है विनियामक निकाय सभी प्रकार के भेदभाव और एकाधिकार संबंधी मुद्दों मे बचने के लिए नियंत्रण बनाए रखता है।

कोविड–19की पृष्ठभूमिः–

दिसम्बर 2019में चीन के बुहान संक्रमण पाया गया, यह शहर कोरोना वायरस का केन्द्र रहा है। चीन में नववर्ष के दौरान यह महामारी फैली, जिसने धीरे–धीरे पूरे विश्व में विकराल रूप ले लिया। इसका चीन और दुनिया के अन्य हिस्सों में आर्थिक गतिविधियों पर गहरा असर पड़ा। आर्थिक क्षति का मुख्य कारण इस बीमारी को रोकने के लिए किये गये प्रयासों से है। यात्रा प्रतिबंध तथा लॉकडाउन के कारण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार जैसी श्रृंख्ला को भी समस्याओं का सामना करना पड़ा, उपभोक्ता मांग कम हो गई इसका वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी दूरगामी प्रभाव पड़ा। कोरोना वायरस जिसे कोविड–19 का नाम दिया गया पूरे विश्व में मंदी के रूप में इसे देखा गया। 2007–2008 के वित्तीय संकट के बाद सबसे बड़ी गिरावट हुई। इस महामारी के कारण वित्तीय बाजार भी प्रभावित हुए जिससे अस्थिरता व अनिश्चितता की स्थिति का सामना करना पड़ा।

2020 में वैश्विक वाणिज्यिक गतिविधि में लगभग 7% की कमी आई। कोविड–19 महामारी का भारत पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, भारत में कोविड–19के 43 मिलियन से अधिक मामले तथा 5,20,000 से अधिक मौतें दर्ज की गई। जिससे यह दुनिया का सबसे अधिक प्रभावित देश बन गया। महामारी के इस दौर में भारतीय अर्थव्यस्था भी पूरी तरह प्रभावित हुई। FY 21 में जीडीपी ग्रोथरेट गिरकर 7.3% हो गई, यह 1970 के दशक के बाद का उच्चतम स्तर था।

कोविड–19के कारण भारतीय शिक्षा प्रणाली पर भी बुरा प्रभाव पड़ा कि स्कूल, कॉलेज बंद हो गए, इसका असर लाखों बच्चों की शिक्षा पर पड़ा। भारत में महामारी के कारण स्वास्थ्य सेवाएं भी प्रभावित हुई मरीजों के लिए पर्याप्त मात्रा में बिस्तरों की व्यवस्था न होने के कारण मृत्युदर बढ़ी। इसका एक मुख्य कारण पर्याप्त चिकित्सा के लिए डॉक्टरों व नर्सों की कमी थी। कोविड–19 का प्रभाव सभी क्षेत्रों पर पड़ा जिससे अर्थव्यस्था संबंधी सभी गतिविधियां प्रभावित हुई।

कोविड–19 का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययनः–

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार कोविड–19 के कारण वर्ष 2020 में वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव के कारण राजकीय कोष में कमी देखी गई, इसका प्रमुख कारण 100 देशों द्वारा अपनी राष्ट्रीय सीमाओं को बंद किया जाना है जिसके कारण आवागमन व पर्यटन की गति पूरी तरह रूक गई जो कि वैश्विक वृद्धि में बाधा बन गया है।

1. **व्यापारिक गतिविधियों पर प्रतिबंध के कारण आर्थिक मंदी–** कोविड–19 के कारण कई देशों में लॉकडाउन किया गया। इसका सीधा असर विश्व की अर्थव्यस्था पर पड़ा जिससे आर्थिक गतिविधियाँ प्रभावित हुई विशेष रूप से ऐसे उद्योग जिनमे प्रत्यक्ष वार्ता शामिल है जैसे खुदरा व्यापार, हॉस्पिटैलिटी, मनोरंजन और परिवहन आदि। आर्थिक प्रतिबंधों का नकारात्मक प्रभाव विकासशील देशों पर भी पड़ेगा यदि आर्थिक प्रतिबंध विकसित अर्थव्यवस्था में लंबे समय तक रहा। वैश्विक में बड़ी गिरावट का मुख्य कारण आर्थिक प्रतिबंध है।
2. **बेरोजगारी में तेजी से वृद्धि–** लॉकडाउन तथा व्यापारिक गतिविधियों में कमी के कारण बेरोजगारी में वृद्धि हुई। कोविड–19 महामारी का व्यापक असर अनेक उद्योगों पर पड़ा। सेवाक्षेत्र, होटल, रेस्टोरेंट और पर्यटन उद्योगों में बेरोजगारी का स्तर बढ़ गया। इसमें उन लोगों की संख्या ज्यादा है जो आजिविका चलाने हेतु दूसरें शहरों में आये थे, उन्हें वापस अपने स्थान लौटना पड़ा।

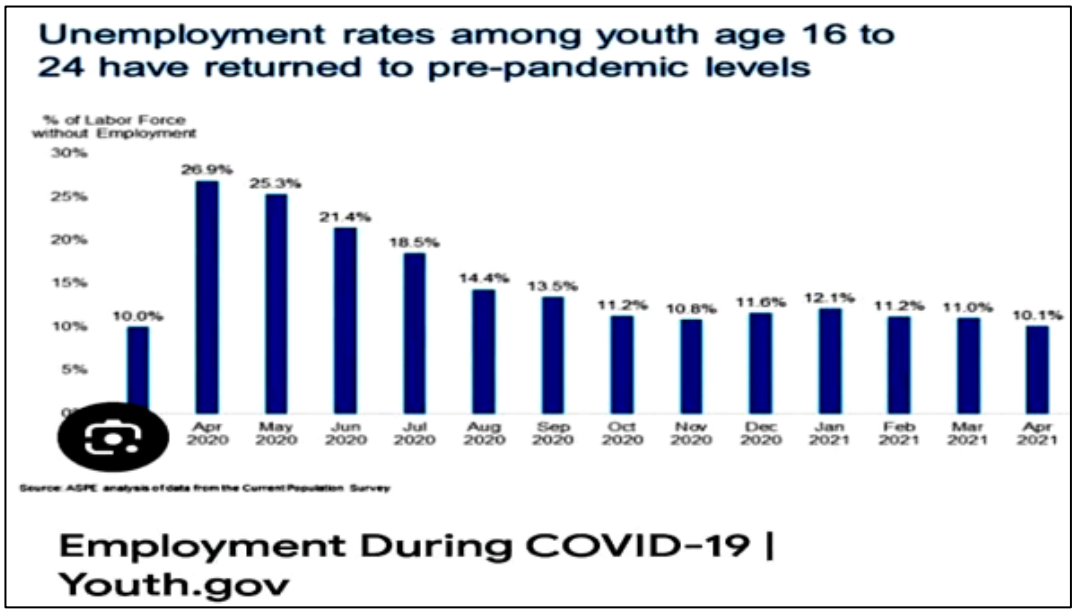

3. **आपूर्ति श्रृंख्ला में रूकावट–** वैश्विक आपूर्ति श्रृंख्ला पर कोविड–19 का बुरा प्रभाव पड़ा। महत्वपूर्ण उद्योग धंधे बंद होने के कारण कच्चे माल की कमी हो गई तथा परिवहन बाधाओं ने उत्पादन व वितरण को प्रभावित किया।

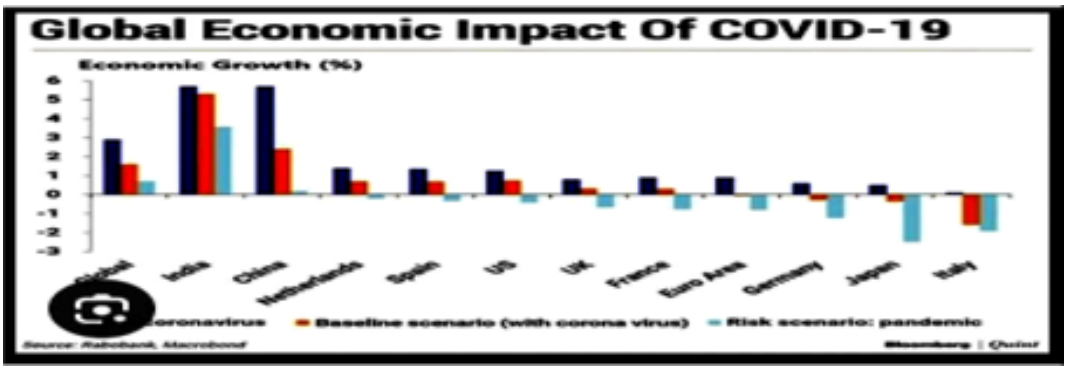

4. **वित्तीय पैकेजों के कारण सरकारी खर्च व कर्ज में वृद्धि–** कोविड–19महामारी से निपटने तथा अर्थव्यवस्था में स्थिरता लाने हेतु सभी देशों की सरकारों ने बड़े पैमाने पर वित्तीय पैकेजों की घोषणा की जिसके कारण सरकारी खर्च व कर्ज में वृद्धि का सामना करना पड़ा।
5. **डिजिटलीकरण में तेजी–** महामारी के प्रभाव से शिक्षा क्षेत्र, चिकित्सा क्षेत्र, नये व्यापारिक संस्थान बंद हो गए। डिजिटल व ऑनलाइन सेवाओं के कारण इन सभी क्षेत्रों को लाभ मिला। ई–कॉमर्स, दूरस्थ कार्य और ऑनलाइन शिक्षा में बढ़ोत्तरी देखी गई।
6. **अविकसित देशों व विकासशील देशों पर महामारी का प्रभाव–** अविकसित देशों में विकासशील देशों की अपेक्षा महामारी का प्रभाव अधिक देखने को मिला, पर्याप्त चिकित्सिय सुविधाएं न होने के कारण मृत्यु दर बढ़ी। क्षेत्रीय असमानता के कारण महामारी का बुरा असर दिखाई दिया।
7. **मांग में गिरावट–** कोविड–19 महामारी के दौरान आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी देखी गई, परंतु लॉकडाउन के कुछ समय बाद सब्जियों व फलों की मांग में लगभग 60% की कमी हो गई। इसका मुख्य कारण थोक खरीदारों और रेस्तरां का बंद होना था। सब्जियों व फलों के मूल्य में गिरावट के बाद पेट्रोल व डीजल की मांग में भी कमी दर्ज की गई।
8. **करों पर प्रभाव–** कोविड–19 महामारी के दौरान लाभ और आय में परिवर्तन देखा गया। इसके फलस्वरूप प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कर में वृद्धि नहीं की जा सकती थी क्योंकि लाभ व आय में पहले की अपेक्षा कमी आ गई थी। यदि अप्रत्यक्ष कर में वृद्धि की जाती तो इसका सीधा प्रभाव गरीबों पर पड़ता तथा मांग भी प्रभावित हो जाती।

9. **निवेश की संभावनाओं में कमी–** कोविड–19 के दौर में कई उद्योग–धंधे तथा बड़ी–बड़ी कंपनियों ने छंटनी के माध्यम से लोगों की नौकरियाँ छीन ली जिसके फलस्वरूप बेरोजगारी बढ़ी जिससे बचत में कमी आई है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनामी की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार निवेश की संभावनाओं में कमी बनी हुई है।
10. **रोजगार व बेरोजगारी दर में वृद्धि–** कोविड–19 के कारण पूरे विश्व को बेरोजगारी का सामना करना पड़ा क्योंकि शटडाउन व मांग में कमी के कारण कंपनियों ने कर्मचारियों की छंटनी कर दी, कई कंपनियाँ बंद हो गई। स्वरोजगार व अनौपचारिक व्यवसाय भी इससे प्रभावित हुए सरकारों ने लोगों और श्रम बाजार की मदद के लिए बेरोजगारी भत्ता प्रदान किया।

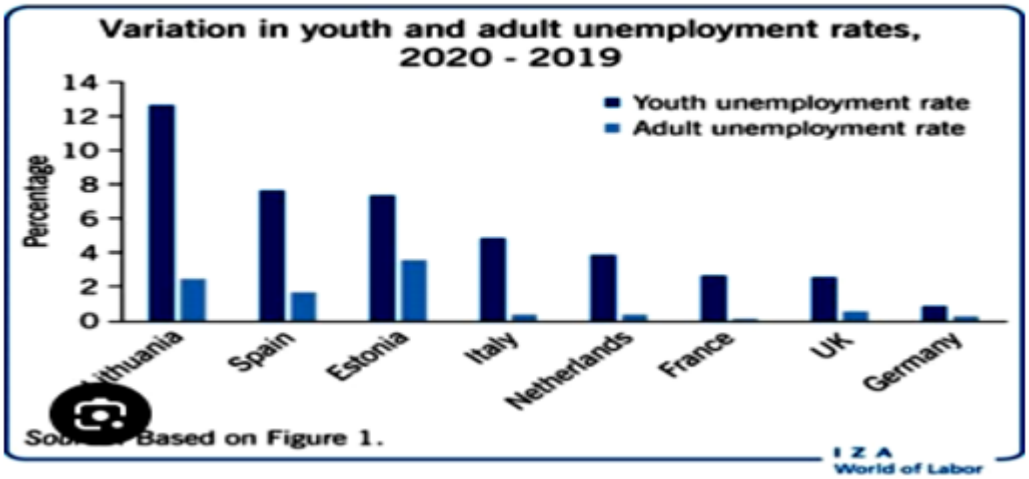

11. **महामारी का शिक्षा पर गंभीर वैश्विक प्रभाव–** कोविड–19 के कारण शिक्षा पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है, शैक्षणिक संस्थानों के बंद हो जाने के कारण बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर या साधन नहीं पहुँच रही थी इसका सीधा असर उनकी शिक्षा पर पड़ा। महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा पर अत्यधिक निर्भरता ने शिक्षा संबंधी सहायता के मौजूदा असमान वितरण को बढ़ावा दिया है।

अनेक सरकारों के पास ऑनलाइन शिक्षा शुरू करने के लिए पर्याप्त संसाधन की उपलब्धता नहीं थी जिससे लाखों बच्चें शिक्षा से वंचित रह गए। कई बच्चों के पास स्मार्टफोन न होने से वें शिक्षा हासिल न कर सकें। मई 2021 तक 26 देशों ने स्कूलों को पूरी तरह बंद रखा, 55 देशों में स्कूल केवल आंशिक रूप या तो कुछ स्थानों में या केवल कुछ कक्षाओं के लिए खुले थे। यूनेस्कों के अनुसार दुनिया भर में स्कूल जाने वालें करीब 90 फीसदी बच्चों की शिक्षा महामारी के कारण बाधित हुई है।

निष्कर्षः–

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना का नाम COVID-19रखा है, जहाँ COका अर्थ–CORONA, VI- VIRUS, D का अर्थ DISEASE और 19-2019 है। इस वायरस को सबसे पहले चीन के 'वुहान' शहर में देखा गया तथा जब यह पूरे विश्व में फैल गया तो WHOद्वारा वैश्विक महामारी घोषित कर दिया गया। इस महामारी का प्रभाव अर्थव्यस्था पर उतना ही प्रभावकारी रहा जितना स्वास्थ्य के लिए। सरकार गरीब व मध्यम वर्ग के साथ–साथ निम्न वर्ग की समस्याओं के लिए भी चिंतित रही है।

सरकार उन उद्यमियों व मजदूर वर्गो के लिए भी संवेदनशील रहीं है जिन्हें लॉकडाउन व आवागमन में प्रतिबंधों के कारण कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उनकी जरूरतों को समझते हुए सरकार ने पिछले वर्ष उन्हें राहत प्रदान करने के लिए बहुत से कदम उठाए थे, इसके अलावा कोविड से प्रभावित उद्यमों को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार ने हाल ही में 6 लाख 28 हजार करोड़ रूपयें के प्रोत्साहन पैकेज की व्यवस्था की है।

कोविड–19संकट में खाद्य सुरक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और रोजगार तथा श्रम मुद्दे, विशेष रूप से श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा एक साथ आ गए है। कार्यस्थल सुरक्षा और स्वास्थ्य प्रयासों का पालन करना और श्रम अधिकारों की सुरक्षा संकट के मानवीय आयाम को संबोधित करने में महत्वपूर्ण होगी। मौजूदा मानवीय संकटों या आपात स्थितियों से निपटने वाले देश विशेष रूप से कोविड–19 के प्रभावों के संपर्क में है।

जर्मनी, स्पेन और फ्रांस सख्त लॉकडाउन प्रवर्तन के माध्यम से मामलों और मौतों की संख्या को कम करने के बाद अपने देश को फिर से खोलने के साथ आगे बढ़ रहे है। कोराना वायरस मामलों की 'दूसरी लहर' को रोकने के लिए परीक्षण, संपर्क अनुरेखण का उपयोग कर रहे है। शोध और वैक्सीन विकास एक ऐसे उपचार को खोजने की उम्मीद में आगे बढ़ रहे है जो हमें एक नए समाज में वापस लाएगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था महामारी से तेजी से उबर रही है, वित्त वर्ष 2024 में इसका वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद कोविड पूर्व वित्त वर्ष 2020 के स्तर से 20प्रतिशत अधिक रहा है। इसका अर्थ यह है कि महामारी के कारण वित्त वर्ष 2021में 5.8 प्रतिशत की गिरावट के बावजूद वित्त वर्ष 2020से 4.6 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर प्राप्त हुई है। 2024 में वैश्विक अर्थव्यवस्था जिस दर से बढ़ेगी उसमें जोखिम संतुलित होंगे। वैश्विक वस्तुओं की कीमतों में गिरावट और आपूर्ति श्रृंख्ला दबावों में कमी के साथ अधिकांश अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फिति का दबाव कम हो गया है, मुख्य मुद्रास्फिति स्थिर बनी हुई है। विकसित अर्थव्यस्थाओं में केन्द्रीय बैंको, विशेष रूप से फंड द्वारा नीतिगत दरों में संभावित कटौती से उभरती बाजार अर्थव्यस्थाओं के केन्द्रीय बैंकों के लिए रास्ता खुलेगा जिससे पूंजी की लागत में कमी आएगी।

संदर्भ ग्रंथ / Reference:-

1. www.wikipedia.org
2. http://www.drishtiias.com
3. http://www.starista.com
4. http://www.testbook.com
5. http://www.vitindia.org
6. http://www.undp.org
7. http://www.ncbi.nim.nih.gov
8. http://www.mekinsey.com
9. http://www.indiabudget.gov.in
10. www.youtube.com